



सिक्किम विश्वविद्यालय
स्थापित: 2007



वॉल्यूम: VI
अंक : III
जून 2018

सिक्किम विश्वविद्यालय क्रानिकल

संपादकीय

प्रियजनों,

जून एक ऐसा महिना था, जिसमें हमें विश्वविद्यालय में बहुत कम गतिविधियां देखने को मिली।

अंग्रेजी विभाग द्वारा आयोजित कार्यशाला का लक्ष्य स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर सुसंगत तरीके से निर्धारित पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए एक विचारशील दृष्टिकोण पर पहुंचना था। यह आशा की गई थी कि शिक्षण प्रक्रिया को और अधिक समन्वयित किया जाएगा और विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों द्वारा पाठ्यक्रम के समकालीन और सुव्यवस्थित तरीके से संचालन की दिशा में अभिविन्यास के रूप में कार्य किया जाएगा। हम चीन में आयोजित एआईएसटी कार्यशाला में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करने के लिए डॉ. भोज कुमार आचार्य, सहायक प्राध्यापक, प्राणिविज्ञान विभाग का अभिनंदन करते हैं और श्री शंकर शॉ, पीएचडी स्कॉलर, सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग को राष्ट्रीय औद्योगिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, तुकुबा, जापान में आयोजित 9वें एआईएसटी अंतर्राष्ट्रीय इमेजिंग डबल्यूएस २०१८ में भाग लेने के लिए बधाई देते हैं।

दिनांक २१ जून २०१८ को विश्वविद्यालय द्वारा मनाए गए अंतर्राष्ट्रीय दिवस योग ने कई लोगों को अपने दैनिक जीवन में योग के अभ्यास को शामिल करने में मदद की। मुझे उम्मीद है कि आने वाले दिनों में हम विश्वविद्यालय में ऐसी घटनाओं और गतिविधियों को देखने को मिलते रहेंगे।

श्रीमती कुंजिनी प्रकाश

इस अंक में :

संपादकीय

सिक्किम विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के शिक्षण पर कार्यशाला

सीएसटीटीसी, शंघाई, चीन पर रिपोर्ट

एआईएसटी, सुकूबा, जापान में 9वें एआईएसटी अंतर्राष्ट्रीय इमेजिंग डबल्यूएस २०१८

सूर्य-विकिरण इवेपो-प्रक्षेपण मॉडलों के वस्तु-आधारित अनुमान के इंटरनेट अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

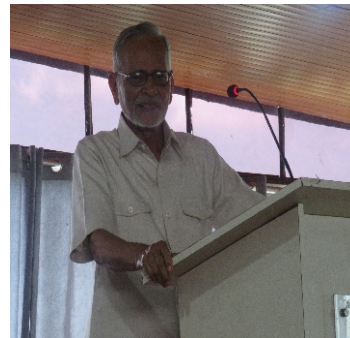
सिक्किम विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के शिक्षण : पद्धतियाँ एवं दृष्टिकोण

डॉ. रोजी चामलिंग, सह प्राध्यापक एवं

अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग

अंग्रेजी विभाग ने दिनांक १३-१४ २०१८ को "सिक्किम विश्वविद्यालय में अंग्रेजी शिक्षण: पद्धतियाँ एवं दृष्टिकोण" विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का उद्घाटन कार्यक्रम दिनांक १३ जून २०१८ को विश्वविद्यालय के कावेरी हॉल में आयोजित किया गया था। इसमें सभी प्रतिभागियों और गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया था। कुलपति प्रोफेसर ज्योति प्रकाश तामांग, कुलसचिव श्री टी.के.कौल, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति, प्रो. के.जी. श्रीवास्तव, परीक्षा नियंत्रक श्री देवाशीष चौधुरी, भाषा एवं साहित्य विद्यापीठ के डीन प्रो. इर्शाद गुलाम अहमद ने दर्शकों को संबोधित किया और अंग्रेजी भाषा और साहित्य को पढ़ाने के महत्व पर अपने विचार सांझा किया।

पृष्ठ सं. 4 पर जारी



ईमेल आईडी : suchronicle@cus.ac.in

दिनांक १०-१७ जून २०१८ के दौरान दक्षिण एशियाई युवा प्रतिभा चीन के विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचारी यात्रा और शंघाई और कुनमिंग, चीन में चीन-दक्षिण एशिया प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और सहयोगी नवाचार पर तृतीय फोरम

डॉ. भोज कुमार आचार्य, सहायक प्राध्यापक, प्राणिविज्ञान विभाग

मैंने दक्षिण एशिया युवा प्रतिभा चीन के विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अभिनव यात्रा तथा चीन-दक्षिण एशिया प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और सहयोगी इनोवेशन (सीएसटीटीसी) पर तीसरा फोरम में दक्षिण एशिया के युवा वैज्ञानिकों में से एक के रूप में भाग लिया, जिसका आयोजन दिनांक १०-१७ जून २०१८ के बीच शंघाई और कुनमिंग, चीन में हुआ था। सिक्किम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर ज्योति प्रकाश तामांग द्वारा किए गए नामांकन के आधार पर मुझे कार्यक्रम के लिए युन्नान अकादमी ऑफ वैज्ञानिक और तकनीकी सूचना (वाईएसटीआई) ने आमंत्रित किया था। पांच दक्षिण एशियाई देशों के कुल २१ वैज्ञानिकों ने भाग लिया जिनमें से तीन अफगानिस्तान से थे, भारत से छह, नेपाल से तीन, पाकिस्तान से छह और श्रीलंका से तीन थे। भारत में पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना (पीआरसी) के विज्ञान और प्रौद्योगिकी परामर्शदाता श्री वेन जून द्वारा आयोजित स्वागत समारोह में भाग लेने के बाद हम ०९ जून २०१८ को भारत से शंघाई गए।

यह यात्रा सीएसटीटीसी और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग विभाग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, पीआरसी द्वारा आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय संचार और समन्वय कार्यक्रम था। शंघाई (११-१२ जून) में हमारे दो दिनों के कार्यक्रम के दौरान हमें शंघाई औद्योगिक प्रौद्योगिकी संस्थान, टोंगजी विश्वविद्यालय और फूडन विश्वविद्यालय - ज्ञान नवाचार हाइलैंड्स के दौरे के साथ चीन के युवा वैज्ञानिकों के प्रतिनिधियों के साथ आमने-सामने वार्तालाप करने का अवसर मिला। हम शंघाईपुडोंग सॉफ्टवेयर पार्क और शंघाई टॉवर में नवीनतम तकनीक देख पाये, जो १२८ मंजिलेयुक्त दुनिया की दूसरी सबसे ऊंची इमारत है और २०.५ मीटर/सेकंड (७४ किमी/घंटा) की गतिसम्पन्न दुनिया का सबसे तेज लिफ्ट है। इन यात्राओं ने हमें चीन द्वारा उपयोग किए जाने वाले शोध की गुणवत्ता और सतत विकास दृष्टिकोण को समझने का अवसर दिया है।

दिनांक १३ जून को हमने कुनमिंग की यात्रा की और शाम को सीएसटीटीसी पर तीसरे फोरम के लिए पंजीकरण किया। १४ जून को ५ वें चीन-दक्षिण एशिया एक्सपो के भव्य उद्घाटन समारोह में भाग लिया जिसमें भारत सहित विभिन्न दक्षिण एशियाई देशों के नेताओं, वैज्ञानिकों और व्यापार समुदायों की भागीदारी देखी गई। दोपहर में दक्षिण एशियाई युवा प्रतिभा चीन के एसटीआई यात्रा के उद्घाटन समारोह में भाग लिया जिसमें विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों द्वारा संबोधित किए गए थे। १५ जून को यून्नान विश्वविद्यालय का दौरा किया जहां हमें विश्वविद्यालय के संकाय और शोधकर्ताओं के साथ बातचीत करने का अवसर मिला। हम विभिन्न समूहों में विभाजित थे और मुझे जीवविज्ञान खंड में शामिल किया गया था। हमारी टीम ने जीवविज्ञान में शोधकर्ताओं की टीम के साथ बातचीत की और प्रत्येक संस्थान की संक्षिप्त गतिविधियों को संक्षेप में साझा किया। हमने सिक्किम विश्वविद्यालय और युन्नान विश्वविद्यालय के बीच विशेष रूप से जीवन विज्ञान के क्षेत्रों में सहयोगी शोध की संभावनाओं पर भी चर्चा की। शाम को हमें पारंपरिक लोक नृत्य और संगीत और आधुनिक कोरियोग्राफी का एक अद्वितीय संलयन 'गतिशील युआन' देखने के लिए थिएटर में ले जाया गया।

कार्यक्रम का अंतिम दिन (१६ जून) सबसे रोमांचक और अत्यधिक उपयोगी था। सुबह हमें कुनमिंग इंस्टीट्यूट ऑफ बॉटनी, चीनी एकेडमी ऑफ साइंसेज और वर्ल्ड एगोफोरेस्ट्री सेंटर में ले जाया गया। पहले प्रोफेसर जियानचुएक्स ने केंद्र की शोध गतिविधियों पर एक विस्तृत प्रस्तुति दी और उसके बाद बातचीत हुई। बाद में हमें कुनमिंग वनस्पति संस्थान उद्यान में ले जाया गया जहां एक शानदार प्रबंधित जैविक विविधता देखने को मिला। दुनिया भर से ली गई पौधों की विभिन्न प्रजातियों से उष्णकटिबंधीय वर्षा वन, रेगिस्तान इत्यादि जैसे विभिन्न पारिस्थितिकी तंत्र कृत्रिम रूप से बनाया गया है। अंत में, दिनांक १६ जून की शाम को यात्रा के सारांश और संगोष्ठी आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता युन्नान प्रांत के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के उप महानिदेशक श्री डिंगलू गुआन ने की। इसके अतिरिक्त, श्री वेन जून, भारत के पीआरसी के विज्ञान और प्रौद्योगिकी परामर्शदाता, सुश्री सॉन्ग्लिन ली, सचिव, युन्नान प्रांत के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, चीनी एकेडमी ऑफ साइंसेज के संकाय और शोधकर्ताओं और युन्नान विश्वविद्यालय के साथ दक्षिण एशियाई युवा वैज्ञानिकों ने भाग लिया संगोष्ठी में। चीन और अन्य दक्षिण एशियाई देशों के वैज्ञानिकों के बीच भावी सहयोग के लिए बातचीत करना मुख्य केंद्रबिन्दु था। हम १७ जून २०१८ को चीन के कुनमिंग से रवाना हुए।

कुल मिलाकर यह मेरे लिए एक रोमांचक दौरा और अधिक सीखने का अनुभव रहा। आर्थिक विकास और तकनीकी रूप से उन्नत विकास के अलावा चीन ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपने गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान का प्रदर्शन किया है। चीन के विभिन्न विश्वविद्यालयों में स्थित सभी प्रयोगशालाएं, जिनका हमने दौरा किया, वे मुख्य राज्य प्रयोगशालाओं के रूप में पहचाने गए और अन्य विकसित देशों के समान विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में उन्नत शोध में लगे हुए हैं। मैंने सीखा कि ये प्रयोगशालाएं दक्षिण एशियाई देशों समेत दुनिया भर से युवा प्रतिभा और सर्वोत्तम मस्तिष्क को आकर्षित करती हैं। उच्च शैक्षिक प्रयासों के लिए छात्रों और शोधकर्ताओं का प्रवाह, और यहां तक कि चीन में हाल के वर्षों में नौकरियों की स्थिति में काफी वृद्धि हुई है। चीन में हर क्षेत्र में युवा लोगों और महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए हमने एक प्रमुख अवलोकन किया था। हम शायद विश्वविद्यालयों या संस्थानों में बुजुर्ग लोगों से मिलकर बातचीत कर सकते थे। हमें सभी युवाओं में बहुत ही युवा उत्साही प्रोफेसरों, वैज्ञानिकों और प्रशासकों द्वारा स्वागत किया गया था। संक्षेप में, मुझे एहसास हुआ कि चीन अर्थव्यवस्था, वैज्ञानिक अनुसंधान, महिला सशक्तिकरण और सतत विकास में अग्रणी है और हमें अपने निकटतम पड़ोसी चीन से बहुत कुछ सीखना है



चर्चा में भाग लेते हुए भारतीय प्रतिभागी



कार्यक्रम के आयोजकों के साथ प्रतिभागी

एआईएसटी, सुकूबा, जापान में ५वें एआईएसटी अंतर्राष्ट्रीय इमेजिंग डबल्यूएस २०१८

प्रोफेसर ज्योति प्रकाश तामांग, सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के मार्गदर्शन में श्री शंकर प्रसाद शॉ, पीएच.डी. स्कॉलर ने २१ जनवरी से ३० जनवरी २०१८ तक राष्ट्रीय उन्नत औद्योगिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान (एआईएसटी), सुकूबा, जापान में आयोजित ५ वीं एआईएसटी अंतर्राष्ट्रीय इमेजिंग डबल्यूएस २०१८ इमेजिंग कार्यशाला में भाग लिया। वह दुनिया भर से १९० अंतर्राष्ट्रीय आवेदकों में से बीस प्रार्थियों में से एक था और यात्रा पूरी तरह से एआईएसटी, जापान द्वारा प्रायोजित थी। एआईएसटी अंतर्राष्ट्रीय इमेजिंग कार्यशाला एक दस दिवसीय आवासीय कार्यक्रम थी, जिसमें लघु माइक्रोस्कोपी से शुरू करते हुए सुपर रेज़ोल्यूशन इमेजिंग तकनीक

के सिद्धांत तक माइक्रोस्कोपी प्रशिक्षण की एक विस्तृत श्रृंखला प्रस्तुत की गयी थी। प्रशिक्षण में ब्राइट फील्ड माइक्रोस्कोपी, फेस कंट्रास्ट, डीआईसी, फ्लोरोसेंस इमेजिंग, कॉन्फोकल माइक्रोस्कोपी के लिए बेसिक ट्रेनिंग, स्पेक्ट्रल इमेजिंग फोटो-एक्टिवेशन, सीए-इमेजिंग, सुपर रेज़ोल्यूशन माइक्रोस्कोपी (एसआरएम), एफसीएस (फ्लोरोसेंस कोरिलेशन स्पेक्ट्रोस्कोपी) विश्लेषण, इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी, जैव-लुमेनेसेंस प्रौद्योगिकी के आधार पर सेल इमेजिंग शामिल थे। विश्वविद्यालय जापान के सुकुब में आयोजित एआईएसटी कार्यशाला में सिक्किम विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करने के लिए शंकर को बधाई देता है।

डॉ. योशीहिरो ओहमिया, एआईएसटी के निदेशक से प्रमाणपत्र प्राप्त करते हुए शंकर और डॉ. सुनील कौल, मुख्य वरिष्ठ अनुसंधान वैज्ञानिक, एआईएसटी, सुकूबा, जापान



सूर्य-विकिरण इवेपो-प्रक्षेपण मॉडलों के वस्तु-आधारित अनुमान के इंटरनेट

श्री पार्थ प्रतिम रॉय, सहायक प्राध्यापक, कंप्यूटर अनुप्रयोग विभाग

वाष्पीकरण हाइड्रोलॉजिक चक्र का महत्वपूर्ण घटक है (डार और अन्य २०१७, लैटिफ और अन्य २०१७)। हाइड्रोलॉजिक जल संतुलन, सिंचाई प्रणाली के डिजाइन और फसल उपज सिमुलेशन का अध्ययन करने के लिए इसका विधिपूर्वक अनुमान महत्वपूर्ण है। वाष्पीकरण की माप को मापने और निगरानी करने के लिए विभिन्न विधियों और समीकरणों को पहले ही नियोजित किया गया है, लेकिन सटीक वाष्पोत्सर्जन माप सीधे प्राप्त करने में कठिनाई के कारण, आमतौर पर यह कई मॉडलों की सहायता से स्थानीय या वैश्विक रूप से उपलब्ध मौसम संबंधी डेटा के आधार पर होता है। आज तक विभिन्न मॉडलों के प्रदर्शन की तुलना और मूल्यांकन करने के लिए कई अध्ययन किए गए हैं (कैप्रियो १९७४; इर्माक और अन्य., २००३; ताबरी और अन्य., २०१३; मैकगुइनेस और अन्य., १९७२)। प्रत्येक मॉडल के अपने पक्ष और विपक्ष होते हैं जो इसे दूसरों से अलग करते हैं और विशेष प्रकार के परिदृश्य के लिए उपयुक्त होते हैं। विकिरण आधारित मॉडल मुख्य रूप से मानदंड पर निर्भर करते हैं जैसे कि सौर विकिरण, अतिरिक्त स्थलीय विकिरण, औसत वायु तापमान, धूप की अवधि आदि। वर्तमान अध्ययन में चयनित विकिरण आधारित मॉडल का उपयोग करके अनुमान लगाने के लिए एक नया मापदंड निर्धारित किया गया है। इस मामले के अध्ययन को इस तथ्य के सबूत के रूप में माना जा सकता है कि वस्तुओं का इंटरनेट (आईओटी) सूर्य त्रिज्या की गणना की प्रक्रिया को बढ़ाने में सक्षम है।

आईओटी को क्षैतिज कंप्यूटिंग प्लेटफॉर्म के रूप में समझा जाता है जहां हेटरोजेसिटी और सुपर लचीलापन के माध्यम से अत्यधिक वितरित कार्यों को निष्पादित करने के लिए सेंसर, एक्ट्यूएटर, माइक्रो-कंट्रोलर और क्लाउड सेवाएं एक साथ आयोजित की जाती हैं। सुपर अनुकूलन, अंतर्निहित चतुरता और उच्च अंतःक्रियाशीलता के कारण आईओटी अनुप्रयोगों के कई क्षेत्रों के क्षेत्र में सबसे आशाजनक तकनीक के रूप में उभरा है जिसमें स्मार्ट मौसम विज्ञान, सटीक कृषि, स्मार्ट सिटी, बुद्धिमत्तापूर्ण औद्योगिक उत्पादन, ई-हेल्थकेयर इत्यादि शामिल हैं। ज्यादातर मामलों में इंटरनेट को महसूस करने में आईओटी का उपयोग कर अनुप्रयोगों का वास्तविक विकास और अभिविन्यास की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह अध्ययन आईओटी के शिल्प कौशल को कुशलतापूर्वक विभिन्न रेडिएटिव को मापने के लिए तैयार करता है।

जर्नल ऑफ एग्रोमेटेरोलॉजी में प्रकाशित

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

दिनांक २१ जून २०१८ को विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय दिवस योग मनाया गया था। योग सत्र विश्वविद्यालय के कौवेरी हॉल में आयोजित किया गया था। संकाय सदस्यों, कर्मचारियों और छात्रों ने विश्वविद्यालय के एनएसएस प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया। आर्ट ऑफ लिविंग फाउंडेशन, सिक्किम चैप्टर की सुश्री कमला राय योग प्रशिक्षक थी। विभिन्न योग आसनों और उसके लाभों को चित्रित करने वाले पोस्टर और प्लेकार्ड भी प्रदर्शित किए गए थे।



पृष्ठ सं.१ से जारी

कार्यशाला का आयोजन स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर अंग्रेजी साहित्य के शिक्षण के लिए एक लचीली शिक्षा का आकलन और प्रारूप देने के लिए किया गया था। यह पाठ्यक्रम से संबन्धित सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाने में सिक्किम विश्वविद्यालय के शिक्षकों को उन्मुख करने का प्रयास था। चर्चा के दौरान अंग्रेजी भाषा और साहित्य के शिक्षण से संबंधित कई मुद्दे उठाए गए थे। कार्यशाला के दूसरे दिन एक खुली चर्चा आयोजित की गई जिसमें परीक्षा नियंत्रक श्री देवाशीष चौधरी ने प्रतिभागियों को कार्यशाला के दौरान केंद्रित विभिन्न मुद्दों पर प्रकाश डाला। वे प्रतिभागी के साथ एक बहुत ही उपयोगी चर्चा कर रहे थे और वे प्रतिभागियों को परीक्षा प्रक्रिया की जटिलताओं को व्यक्त करने में भी सक्षम रहे और अपने प्रश्नों को हल करने में भी सक्षम थे। श्री चौधरी ने आगे सुझाव दिया कि शिक्षक अनिवार्य रूप से प्रेरणादायक हो सकते हैं और छात्रों की क्षमताओं के अनुसार कक्षा का प्रबंधन करने में सक्षम होना चाहिए। सभागृह इस तथ्य पर भी सहमत हो गया कि सवाल अधिक सुसंगत, केंद्रित होना चाहिए और एक परीक्षा होनी चाहिए कि विद्यार्थी कितना जानता है न कि कितना नहीं जानता है।